बालिका विद्यापीठ लखीसराय *(811311)*

वर्ग - द्वितीय दिनांक - *19/07/2020*

विषय - हिंदी

N.C.E.R.T पर आधारित

पाठ - *4* (पहाड़ से बड़ी लगन)

बच्चों , यह कहानी दशरथ मांझी की है । उनका जन्म बिहार के गया के पास गहलोत नामक स्थान पर सन 1934 में हुआ था।उनका बचपन अभावों में बीता था । उनकी मां ने उन्हें लगन का पाठ पढ़ाया था। मां ने उन्हें सिखाया था कि लगन से अपने काम में लगे रहना चाहिए । इससे एक- न - एक दिन सफलता जरूर मिलती है । उन दिनों मांझी के गांव में ना बिजली थी , ना पानी की अच्छी सुविधा। अपनी छोटी से छोटी जरूरतों को पूरा करने के लिए लोगों को या तो पहाड़ चढ़कर दूसरी तरफ उतरना पड़ता था या पूरे पहाड़ का चक्कर लगाकर जाना पड़ता था। जब दशरथ मांझी बड़े हुए तो उनका विवाह फाल्गुनी देवी से हुआ । एक बार फाल्गुनी की तबीयत खराब हो गई । परंतु अस्पताल जाने के रास्ते में फिर पहाड़ खड़ा था । पहाड़ को पार

करने के लिए पचपन किलोमीटर का रास्ता था । यह बहुत लंबी दूरी होती है । फाल्गुनी को समय पर अस्पताल नहीं पहुंचाया जा सका। रास्ते में ही उनकी मौत हो गई । इस घटना से मांझी को बहुत दुख हुआ । उन्हें लगा कि जब तक पहाड़ बीच में है, उनके गांव से किसी को भी र समय पर अस्पताल नहीं पहुंचाया जा सकेगा । उसी समय उन्होंने निश्चय कर लिया कि जो उनके साथ हुआ है वह किसी और के साथ नहीं होने देंगे । सन् 1960 में जब उन्होंने अपनी छैनी और हथौड़े से पहाड़ को तोड़ना शुरू किया तो लोग उन्हें पागल कहने लगे । किसी ने उनका मजाक उड़ाया तो किसी नेता ने सुनाएं , फिर भी मांझी की लगन कम ना हुई । वे लगे रहे दिन - रात, सुबह - शाम बिना थके , बिना रुके । धीरे-धीरे उनके गांव के कुछ लोग युवक - युवतियां भी सहायता के लिए जुड़ने लगे। फिर एक दिन उनकी लगन पहाड़ से भी बड़ी हो गई । मांझी का हथौड़ा रुका 22 साल बाद सन् 1982 , में जब अस्पताल पहुंचने का 55 किलोमीटर का रास्ता 15 किलोमीटर में बदल गया था । आप मान जी के मन में संतोष था कि उनके गांव का कोई व्यक्ति इलाज के अभाव में नहीं मरेगा । बच्चों को पढ़ाई के लिए स्कूल जाने के लिए पहाड़ नहीं चढ़ना पड़ेगा ंइस लड़ाई के साथ ही मान जी कैंसर के

शिकार हो गए थे । इस बीमारी ने 17 अगस्त 2007 को 72 वर्ष की आयु में उनकी जान ले ली । परंतु , उनकी लगन ने उन्हें इस संसार में सदा के लिए अमर कर दिया ।

हमने सीखा :- लगन और परिश्रम के बल पर इंसान असंभव को भी संभव कर सकता है ।

शब्दार्थ : - (लिखे और याद करें -)

अभावों :- गरीबी

लगन :- पूरे मन से काम करना

सफलता :- कामयाबी

अस्पताल :- चिकित्सक

निश्चय :- पक्का इरादा

संतोष :- किसी बात की चिंता ना होना

अमर :- जिसे हमेशा याद किया जाए , जो मर कर भी कभी ना मरे ।

****

ज्योति